हनुमान चालीसा

दोहा

श्री गुरु चरण सरोज रज, नजि मन मुकुरु सुधारी
बरनंऊ रघुबर बमिल जसु, जो दयाका फल चारी ॥
बुद्धहीन तनु जानकि सुमरिँ पवन कुमार
बुद्धा विधा देहु मोहि, हरहु कलेश वकार ॥

चालीसा

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर | जय कपीस तहुँ लोक उजागर ॥
रामदूत अतुलति बल धामा | अंजना पुत्र पवन सुत नामा ॥
महावीर विक्रम बजरंगी | कुमति निवार सुमतिके संगी ॥
कंचन बरन वरिज सुवेसा | कानन कुण्डल कुंचति केसा ॥
हाथ बजर और धवजा बरिजै | कांधे मूंज जनेऊ साजै ॥
शंकर सुवन केसरी नंदन | तेज प्रताप महा जगबंधन ॥
वदियावान गुनी अति चातुर | राम काज करबि को आतुर ॥
प्रभु चरतिर सुनबि को रसयिा | राम लखन सीता मन बसयिा ॥
सूक्ष्म रूप धरी सयिहा दिखावा | वकिट रूप धरि लंक जरावा ॥
भीम रूप धरि असुर संहारे | रामचंद्र जी के काज संवारे ॥
लाये संजीवन लखन जयिाये | शरीरघुवीर हरष उर लाये ॥
रघुपति कीन्हीं बहुत बड़ाई | तुम म प्रयि भरत सम भाई ॥
सहस बदन तुम्हरो यश गावे | अस कहा श्रीपति किंठ लगावे ॥
सनकादकि ब्रह्मादकि मुनीसा | नारद सारद सहति अहीसा ॥
जम कुबेर दकिपाल जहां ते | कविकोवदि कहा सिके कहां ते ॥
तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा | राम मलियाे राज पद दीन्हा ॥
तुम्हरो मंत्र वभिषन माना | लंकेश्वर भये सब जग जाना ॥
जुग सहस्त्र योजन पर भानू | लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥
प्रभु मुदरकि मेलि मुख माहि | जलधिलांघगिए अचरज नाहीं ॥
दुर्गम काज जगत के जेते | सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥
राम दुआरे तुम रखवारे | होत न आज्ञा बनि पैसारे ॥
सब सुख लहै तुम्हरे सरना | तुम रक्षक काहू को डरना ॥
आपन तेज समहारो आपै | तीनों लोक हांक ते कांपै ॥
भूत पशिाच नकिट नहि आवै | महावीर जब नाम सुनावै ॥
नासै रोग हरै सब पीरा | जपत नरितर हनुमत बीरा ॥
संकट ते हनुमान छुड़ावे | मन क्रम वचन ध्यान जो लावै ॥
सब पर राम तपस्वी राजा | तनि के काज सकल तुम साजा ॥
और मनोरथ जो कोई लावे | सोई अमति जीवन फल पावै ॥
चारो जुग प्रताप तुम्हारा | है प्रसदिध जगत उजयिरा ॥
साधु संत के तुम रखवारे | असुर नकिंदन राम दुलारे ॥
अष्ट सिद्धि निवनधिके दाता | अस वर दीन जानकी माता ॥
राम रसायन तुम्हरे पासा | सदा रहो रघुपतिके दासा ॥
तुम्हरे भजन राम को पावै | जनम जनम के दुःख बसिरावै ॥
अंत काल रघुबर पुर जाई | जहां जनम हरि भिक्त कहाई ॥
और देवता चति न धरई | हनुमत सेइ सर्व सुख करई ॥
संकट कटै मटि सब पीरा | जो सुमरि हनुमत बलबीरा ॥
जय जय जय हनु गुरु देव की नाई ॥

जो शत बार पाठ कर कोई | छूटह बिंदमिहा सुख होई ॥
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा | होय सदिधिसाखी गौरीसा ॥
तुलसीदास सदा हरचिेरा | कीजेये नाथ हृदय महं डेरा ॥

दोहा

पवन तनय संकट हरन मंगल मूर्तरूप |
राम लखन सीता सहति हृदय बसहु सुरभूप ॥